RESEARCH PAPER | Social Science | Volume : 4 | Issue : 3 | Mar 2014 | ISSN - 2249-555X

भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के विषेष सन्दर्भ में ड्रगैन की रणनीतिक तैयारी

KEYWORDS

Prof. Dharmabir Dhanda
Assistant Professor, Defence Education Department, CRM Jat College Hisar

Prof. Dinesh Kumar
CRM Jat College Hisar

वर्तमान विष्व में चीन और भारत दो उभरती महाषक्तियाँ हैं किन्तु भारत की अपेक्षा चीन के भीतर विष्व षक्ति बनने की महत्वाकांक्षा कहीं ज्यादा आक्रामक धन से परिलक्षित होती है। यही कारण है कि चीन ने हर क्षेत्र में भारत की अपेक्षा ज्यादा आक्रामक ढंग से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। चाहे वह आर्थिक विकास हो, सामरिक क्षेत्र, मनोरंजन व खेल जगत, अंतरिक्ष विज्ञान, कला एवं संस्कृति तथा अपने पड़ोसी देषों के ऊपर धमक। इन सब क्षेत्रों में चीन ने भारत की अपेक्षा ज्यादा आक्रामक नीति अपनाई है। वर्तमान समय में एषिया में भारत चीन का प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी है। यही वजह है कि भारत व चीन के मध्य आर्थिक संबंध ऊंचाई पर होने के बावजूद चीन भारत को घेरने के लिए हिन्द महासागर स्थित भारत के पड़ोसी देषों में अपने नौसैनिक अड्डे बना रहा है ताकि वह हिन्द महासागर पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सके। उसे पता है कि इस समूचे क्षेत्र पर उसी का प्रभुत्व होगा। अमेरिकी रक्षा विषेशज्ञ रॉबर्ट डी. कैपलान का कहना है 'भारत और चीन पानी पर प्रतियोगिता कर रहे हैं। भारत और चीन दोनों हिन्द महासागर पर अपने क्षेत्र को बढ़ाना चाहते हैं। जिसके कारण 21वीं सदी के मध्य हिन्द महासागर केन्द्रीय स्थान ले लेगा। चीन और भारत दोनों ही अपने लोगों को गारंटी देते हैं कि वे तेल और गैस की सप्लाई कर रहे हैं।

31 अगस्त 2010 को भारतीय विदेष मंत्री एस.एस. कृश्णा संसद को बता चुके हैं कि चीन 'स्ट्रींग ऑफ पर्ल' पर रणनीति के अनुसार भारत के पड़ोसी देषों को मित्र बनाने का प्रयत्न कर रहा है तथा चीन हिन्द महासागरीय मामलों में जरूरत से ज्यादा रुचि ले रहा है। यह दोनों ही इसके आर्थिक एवं सुरक्षा हितों को बचाने तथा बढ़ते हुए भारत को संतुलित करने के लिए है।

रणनीतिक दृश्टि से भारत की चिन्ता चीनी अड्डे हैं जिनमें ग्वादर, बन्दरगाह, चटगांव बन्दरगाह, सिटवे, हम्बन टोटा पोर्ट, और मराओ दीप प्रमुख हैं।

चीन पाकिस्तान के ग्वादर बन्दरगाह पर निर्माण कर रहा है। पाकिस्तान ने चीन को इस बन्दरगाह के निर्माण और विकास का कार्य सौंपा है। इसके विकास में चीन पाकिस्तान को करोड़ों डालर दे चुका है। पाकिस्तान ने इसके बदले चीन को ग्वादर में नौसैनिक आधार बनाने का प्रभाव भी दे चुका है। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री चौधरी अमन मुख्तार तो यहां तक कह चुके हैं कि यदि चीन ग्वादर पर नौसैनिक आधार बनाता है तो वह चीनी सरकार के आभारी होंगे।

भारत के लिए यह एक प्रमुख चिन्ता का विशय है। यदि चीन ग्वादर में नौसैनिक आधार बनाता है तो उसका इस्तेमाल निष्चित रूप से भारत के विरुद्ध ही होगा। इस प्रकार समुद्री रास्ते से भारत के समक्ष चीन पाकिस्तान गठजोड़ की चुनौती उभर रही है। इस सहयोग में भारत को घेरने के लिए दीर्घकालीन रणनीतिक निहितार्थ है। जबकि चीन का कहना है कि भारत को घेरने का उसका कोई मकसद नहीं है बल्कि इसका उपयोग वह अपने आर्थिक हितों के लिए करेगा।

चीन की काराकोरम राजमार्ग के निर्माण में सहभागिता रही है। इस मार्ग के निर्माण से चीन–पाकिस्तान के सामरिक सम्बन्धों में काफी मजबूती मिली है। इस राजमार्ग के निर्माण से गिलगिट–वाल्टिस्तान, में पाकिस्तान व चीन की साझा परियोजनाओं के लिए अबाध गति से संसाधन मुहैया कराए जा सके हैं।

भारत की नई चिन्ता चीन और बांग्लादेष के मध्य बढ़ते हुए सम्बन्ध भी हैं। चटगांव बन्दरगाह से बांग्लादेष का 90 प्रतिषत व्यापार होता है। इस बन्दरगाह के विकास के लिए भी चीन 8.7 बिलियन डॉलर्स (करीब 46,675 करोड़ रुपए) की मदद कर रहा है। बांग्लादेष का कहना है कि बीजिंग के साथ उसका सम्बन्ध आपसी समझ राजनीतिक व आर्थिक हितों पर आधारित है। किन्तु सिल्लीगुड़ी गलियारे को लेकर भारत की चिन्ता सामने आती है। जिससे सड़क व वायुमार्ग भी षामिल हैं। सिलीगुड़ी गलियारा, चीन व बांग्लादेष की मित्रता में एक महत्वपूर्ण तथ्य माना जा सकता है। जो पूर्वोत्तर भारत को संकट में ला सकता है। इसे चीन को बांग्लादेष से सीधा सम्पर्क करने में मदद होगी।

भारतीय सेना की चिंता यह हो सकती है कि यदि बांग्लादेष चीन को सैन्य आधार प्रदान करता है तो इससे पूर्वोत्तर भारतीय वायुसेना के आधार व सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होगा। युद्ध के दौरान भारतीय लड़ाकू विमान बांग्लादेष या चीन के राडार या सतर्कता नेटवर्क में आसानी से आ सकते है। यह भी हो सकता है कि बांग्लादेष विकास की खातिर चित्तागोंग का हवाई अड्डा प्रदान कर दे। जिसे नौ सेना भी उपयोग में ले सकती है। चीन बांग्लादेष से भारतीय मिसाइल गतिविधियों पर भी अपनी पैनी नजर रख सकता है। चटगांव के आसपास अक्सर चीनी नौसैनिक युद्धपोत देखे जाते हैं।

चीन म्यांमार के सिटवे बन्दरगाह पर चीन एक तेल एवं गैस पाइपलाइन बिछा रहा है। जो सिटवे गैस फिल्ड से चीन तक तेल व गैस की सप्लाई करेगा। इस बन्दरगाह का निर्माण एक भारतीय कंपनी ने 643.8 करोड़ रुपए में किया था। लेकिन इस बन्दरगाह से भारत की अपेक्षा चीन को ही अधिक लाभ है। 'म्यांमार भारत के लिए सामरिक, राजनीतिक व भू–रणनीतिक दृश्टि से महत्वपूर्ण है। भारत के लिए रणनीतिक व सुरक्षा हितों के संदर्भ में म्यांमार के साथ एक सहयोगात्मक एक मैत्रीपूर्ण रिश्ता सर्वोच्च अहमियत रखता है। बंगाल की खाड़ी में भारत की सुरक्षा हितों और जहाज रानी मार्गों की जो भारतीय व्यापार के लिए भी खास महत्व रखते हैं, रक्षा करने के लिए म्यांमार के साथ समीकरणों का निर्माण करना भारत के लिए जरूरी है। चीन की दक्षिण पूर्वी एषियाई नीतियां भी आसियान के प्रति और खासतौर पर म्यांमार को लेकर भारत की नीतियों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक रहे हैं।

दक्षिण पूर्वी एषियाई देषों में सबसे निकट देष होने के कारण भारत की क्षेत्रीय रणनीति में म्यांमार ऊंची प्राथमिकता रखता है। चीन ने म्यांमार के साथ सारपूर्ण रक्षा सहयोग व्यवस्थाएं कर रखी हैं। यह रिश्ता मकांग और इरावड़ी नदियों से होकर म्यांमार में बन्दरगाह के साथ जोड़ने की चीन की कोषिष और म्यांमार के दक्षिण पष्चिम तटों पर अपनी नौ सेना के लिए सैन्य संचालन की सुविधाएं मिलने की पृश्ठभूमि के मद्देनजर भारत के लिए स्पश्ट रणनीतिक और सुरक्षा सारोकार खड़ा करता है। चीन म्यांमार से संबंध स्थापित कर अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर सक्रिय नजर रख रहा है। म्यांमार ने हाल ही में अंडमान से 20 किमी दूर कोकोद्वीप पर अपना नौसैनिक अड्डा बनाकर बंगाल की खाड़ी में अपने नौ सैनिक उपस्थिति दर्ज कराई है।

इसी प्रकार चीन ने भारत के दक्षिण छोर पर स्थित श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर डीप वाटर पोर्ट बना रखा है। यहां प्रथम चरण का कार्य सम्पूर्ण हो चुका है। रणनीतिक दृश्टि से यह बन्दरगाह भारत के लिए अत्यन्त संवेदनषील है क्योंकि यहां से भारतीय वाणिज्यिक और नौसैनिक पोत निकलते हैं। चीन भारत को दक्षिणी छोर से घेरने में जुटा है। श्रीलंका सरकार ने चीन को वादा किया था कि वह बिना विरोध के चीनी गतिविधियों को अपने यहां से संचालित होने देगा।

चीन हंबनटोटा पर हाइवे पावरप्लांट व एक नए अड्डे की सुविधा जुटा रहा है। मालदीव में भी वर्श 1999 में चीन को मराओ द्वीप लीज पर दिया था। चीन इसका उपयोग निगरानी अड्डे के रूप में करता है। मालद्वीव व श्रीलंका में समुद्री अड्डे के निर्माण के फलस्वरूप हिन्द महासागर क्षेत्र में चीनी जहाजों के आवाजाही में भारतीय क्षेत्र पर निगरानी की संभावना को बढ़ा दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि सामरिक महत्व वाले मालद्वीव में चीन नौसैनिक अड्डा स्थापित कर व भारत की हिन्द महासागर में मुक्त पहुंच को बाधित करना चाहता है। चीन पिछले दो दषकों में भारत को घेरने की आक्रामक नीति अपना रखा है और काफी हद तक अपनी स्थिति भारत के विरुद्ध मजबूत कर चुका है। जबकि भारत का रणनीतिक अभियान अत्यन्त सुस्त है। भारत रणनीतिक महत्व की नीतियों को लागू करने में चीन से कहीं पीछे नजर आता है। जिस प्रकार पिछले कुछ समय से चीन लद्दाख और पूर्वोत्तर क्षेत्र में भारतीय सीमा का उल्लंघन कर रहा है और भारतीय क्षेत्र में काफी अंदर तक घुस कर आंखें दिखा रहा है भारत के लिए षुभ संकेत नहीं हैं दूसरी तरफ भारतीय नेतृत्व किसी भी तरह का कड़ा संदेष देने में विफल रहा है। यह देखने योग्य है कि चीन की सह परस्ती मिलने से अब बांग्लादेष व हाल में म्यांमार तथा श्रीलंका की सेना भी सीमा उल्लंघन व हलकी झड़प करने से जरा भी गुरेज नहीं कर रहे हैं। पिछले कुछ महीनों में जिस प्रकार भारत के पड़ोसी देष पाकिस्तान सेना के जवान भारतीय सीमा में भीतर तक घुसकर भारतीय जवानों की हत्या कर चले जा रहे हैं। पूर्वोत्तर के मणिपुर में म्यांमार सेना के जवान भारतीय सीमा में स्थित विवादित सीमा में धुसकर अपना कैम्प गाड़ रहे हैं। इससे पता चल रहा है कि किस प्रकार भारत की धाक क्षेत्र में कम हुई है। दूसरी तरफ भारत यह सबकुछ मूक दर्षक बना देख रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि चीन 1961 के पूर्व की नीति को दोहरा रहा है। वह लगातार सीमा उल्लंघन कर भारत की आक्रामक सहनषीलता का पता लगा रहा है। इस बार चीन चौतरफा जाल बिछा रखा है क्योंकि उसे पता है कि भारत की स्थिति 1961 के समय की तरह नहीं है। अपितु भारत मजबूत स्थिति में है। यदि भारत ने कड़ा संदेष नहीं दिया तो संभव है कि चीन अपने सहयोगी देषों के साथ मिल अथवा स्वयं भारत को हल्के सीमित युद्ध में ढकेल दे। ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था दस वर्श पीछे चली जाए। भारत की

Volume : 4 | Issue : 3 | Mar 2014 | ISSN - 2249-555X

अर्थव्यवस्था में आया वर्तमान संकट कोढ़ में खाज का काम कर रही है। जिस प्रकार पा. किस्तान नकली करेंसी भेज कर व चीन अपने रास्ते सामान भेजकर भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपना कब्जा करना चाहता है इससे पता चलता है कि उनकी रणनीति चौतरफा है और भारतीय अर्थ व्यवस्था को पंगु बनाने के लिए कितने प्रयासरत है। अगर वर्तमान समय में भारत को युद्ध के लिए जाना पड़ा तो भारत के लिए संकट कितना बढ़ जाएगा। उकसावे की यह रणनीति इसी का हिस्सा लगती है। यदि भारत किसी हल्के युद्ध की स्थिति में फंसता है तो इसका सीधा लाभ चीन को होगा। वह क्षेत्र की एकमात्र आर्थिक महाषक्ति बची रह जाएगी, विष्व षक्ति बनने की उसकी लालसा पूरी होती नजर आएगी।

निष्कर्ष :–

भारत व चीन के विरुद्ध अपनी नीति की समीक्षा करते हुए और आक्रामक नीति का निर्माण करना चाहिए।

भारत को अपनी अर्थव्यवस्था में चीनी पहुंच को हतोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए।

देष के सीमावर्ती क्षेत्र के अंतिम बिन्दु तक सैन्य महत्व के आधारभूत ढांचा का निर्माण करना चाहिए।

सीमावर्ती क्षेत्र तक सेना की अबाध पहुंच बनाने के लिए विषेश प्रयास करना चाहिए।

सीमा उल्लंघन की घटनाओं का कड़ा प्रतिकार ताकि पड़ोसी देष को कड़ा संदेष जाए जिससे बार–बार वह दुस्साहस की हिम्मत न करे।

पड़ोसी देष के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का विकास तथा उनके साथ सहयोगात्मक संबंधों का निर्माण और उन्हें इस बात का भरोसा दिलाना कि भारत उनका नैसर्गिक मित्र है।

चीन की तरह भारत को भी जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, तजाकिस्तान, किर्गिस्तान व दक्षिण चीन सागर स्थित देषों से जो कि चीन के प्रतिद्वन्द्वी हैं, उनके साथ रणनीतिक साझीदारी विकसित करना।

REFERENCE 1. Dixit J.N. Bharitya Videsh Neeti, (Hindi) Ptabhat Prakashan Delhi, 2007 p 275-278 | 2. Sakhiya Vijay, China-Bangladesh Relations and Potential for Regional Tensions, China Brief Vol. 9 issue-15 July 2009. | 3. Dixit J.N. Bharitya Videsh Neeti, (Hindi) Ptabhat Prakashan Delhi, 2007 p 275-278 | 4. Gurnam Chand, "India Rivalry in the Indian Ocean SOUTH ASIA POLITICS Monthly magazine, New Delhi. Aug/2011 Vol. 10 No. p. 34-38 | 5. Gupta Somimi Sen, 'Take aid from China and take a pass on Human Right, The New Yark Times (9 March, 2008) | 6. Gurnam Chand, "India Rivalry in the Indian Ocean SOUTH ASIA POLITICS Monthly magazine, New Delhi. Aug/2011 Vol. 10 No. p. 34-38 | 7. http://www.dainik bhaskar. com (3 Feb 2013) p. 14